वर्तमान युग में प्रयोजन मूलक हिन्दी की प्रासंगिकता

DR MANJEET
ASSISSTANT PROFESSOR
VAKM BHADURGARH

भाषा विचारों के आदन–प्रदान का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। भाषा के आभाव में समाज की कल्पना संभव नहीं है, क्योकि विचारों के आदान–प्रदान से ही लोग एक–दूसरों को कहने का अवसर देते है। और इस प्रकार परस्पर उनमें घनिष्ठता आती हैं और यही घनिष्ठता एक स्वस्थ समाज का निर्माण करती हैं। अतः कहना न होगा कि समाज के उद्‌भव, उन्नति व विकास का माध्यम भाषा ही है। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है। वर्तमान युग में वैज्ञानिक, तकनीकी और कम्प्यूटर के क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग में अनेक नूतन आयाम हमारे सामने आए हैं। जिनसे राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है।

डॉ0 नरेया मिश्र ने भाषा अध्ययन के सन्दर्भ में प्रकाया डालते हुए कहा है कि "भाषा अध्ययन के मुख्यतः दो पक्ष हैं – प्रथम संरचनात्मक और द्वितीय प्रयोजनमूल का भाषा का संरचनात्मक पक्ष व्याकरण से संबंधित होता हैं, तो प्रयोजन मूलकता उसके प्रयोग और सम्प्रेषण पद आधरित होते हैं।"

ठस परिभाषा के प्रकाया में हम देखते हैं कि संरचनात्मक पक्ष्ज्ञ जहाँ व्याकरणिक नियमों में बंधा हुआ होता हैं वहीं प्रयोजन मूलकता याब्द किसी प्रकार के प्रयोजन या कार्य सिद्वि की ओर सेंकेत करता हैं। वैसे मोटे तौर पर देखा जाए तो भाषा के ये दोनों ही रूप एक–दूसरे के पूरक है। कुछ समय तक संरचनात्मक भाषा प्रयोग में लाई जाती रही है, किन्तु संसार की परिवर्तन याक्ति तो सर्वमान्य हैं। यह सार्वभौमिक सत्य है कि संसार की किसी वस्तु में स्थिरता नहीं है। इस सृष्टि पर जितने भी पदार्थ है सब परिवर्तन्याील हैं। उनके साथ मानव भाव भी परिवर्तनग्रस्त होते जाते हैं।

ऐसे में भला भाषा की क्या कि बिसात कि वह अपने प्रारम्भिक रूप ही स्थिर रह पाए। भाषा के इस बदलते स्वरूप पर प्रकाया डालते हुए पृथ्वी राज पाण्डेय ने भी कहा है कि – "पुरातन काल से मनुष्य की आदिम दयाा से भाषा अपना स्वरूप बनाती–बिगाडती आई हैं। जिस प्रकार कोई भाव कल व्यक्त किया जाता हैं वह उसी प्रकार आज व्यक्त नहीं किया जा सकता जो रूप आज है उस पर भी परिवर्तन का प्रभाव हाथ बढाए दिखता है। यह गति सनातन काल से है। ––– मनुष्य की सभ्यता का प्रभाव अनायास पडा करता है। उसी प्रकार जलवायु और स्थल की छाप भी उस पर विद्यमान रहती हैं। स्थान अथवा जलवायु में

हेर–फेर होते ही भाषा में भी भेद कार्यगत हो जाता हैं, जिससे नए च्राब्द बनते है और पुराने लुप्त हो जाते है अथवा परिवार्तित हो जाते हैं। यही कारण है कि कियी भाषा के इतिहास में भिन्न–भिन्न प्रकार के च्राब्द मिलते है। उसमें एक अर्थ के द्योतक अनेक च्राब्द होते हैं अथवा एक ही च्राब्द के भिन्न–भिन्न अर्थ होते हैं।"

अतः डॉ0 पाण्डेय की भाषा संबंधित इस टिप्पणी के प्रकाच्या में हम पाते हैं कि भाषा एक बहता हुआ नीर हैं। जिस प्रकार नदी अपने उदगम स्थल से निकलती है तो पैनी धार के रूप मे निकलती है लेकिन मार्ग में उसमें असंख्यक झरने बरसाती नाले आदि मिलकर उसको एक वृहत रूप प्रदान करते हैं ठीक इसी प्रकार समय, स्थिति व जरूरत के आधार पर भाषा का रूप परिवर्तित होता रहता हैं।

अब देखना यह है कि ऐसी क्या जरूरत आन पडी थी कि भाषा का सरचनात्मक रूप भाषाभिव्यक्ति में अपने को असमर्थ मान रहा था और जिसके परिणाम स्वरूप प्रयोजन मूलक हिन्दी की आक्चयकता महसूस हुई।

भले ही हिन्दी के सन्दर्भ में 'प्रयोजनमूलक' च्राबद का प्रयोग थोडे समय पूर्व ही च्रुरू हुआ है लेकिन ऐसा नहीं हैं कि इस च्राब्द के प्रयोग से पहले हिन्दी निष्प्रयोजन थी। हिन्दी भाषा कल भी प्रयोजनमूलक थी, आज भी है और आने वाले समय में भी रहेगी। यह दूसरी बात है कि इस च्राब्द के स्थान पर पहले 'काम–काजी हिन्दी' व्यावहारिक हिन्दी और अनुप्रयुक्त हिन्दी आदि च्राबद प्रयुक्त होते रहे है। डॉ0 नरेच्या मिश्र ने 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' के च्राब्दि क अर्थ पर प्रकाच्या डालते हुए कहा है कि "हिन्दी भाषा का वह विच्चिाष्ट स्वरूप जो मनुष्य के ज्ञान–विज्ञान से संबधित संदर्भो को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।, उसे प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं।"

मनुष्य एक चिन्तनच्चील प्राणी है। कोई भी कार्य निस्प्रयोजन नहीं करता और उसके इन कार्यो को निस्पादित करने के लिए भाषा की महती आक्चायकता पडती है। जहाँ साहित्यिक भाषा व सरंचनात्मक भाषा जवाब दे जाती है वहाँ प्रयोजनमूलक भाषा सहायक सिद्व होती हैं। वर्तमान युग को औद्योगिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक ऐव तकनीक का युग कहा जाता हे इस युग को 'यान्त्रिक युग' कम्प्यूअर युग आदि नामों से पुकारा जाता हैं। कम्प्यूटर के इस युग में वह भाषा आगे निकल सकती है जो जन–जन की भाषा बनने योग्य हो और जिसमें भावकाभ्वियक्ति की प्रबल क्षमता हो। इस उद्देच्य को ध्यान में रखते हुए हमे हिन्दी

में प्रयोजनमूलकता को बनाए रखने की आक्यकता अनुभव हुई। प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग समाज की उन्नति या विकास के लिए बोल–चाल और साहित्य से भिन्न–भिन्न प्रयोजनों को जाता हैं।

आधुनिक युग में प्रयोजनमूलक हिंन्दी के महत्व व प्रासंगिकता से हम अनभिज्ञ नहीं हैं व्यवसाय, संचार राजनितिक, कार्याजय, चिक्षा के क्षेत्र व समाज आदि सभी जगह आज प्रयोजनमूलक हिन्दी अपनी धाक जमा चुकी है।

वर्तमान समय मे नए–नए उत्पाद सामने आ रहे है उनके उपभोक्ता चाहरो से अधिक गाँव में हैं। जन सामान्य में उत्पादों का प्रचार हिन्दी में संभव है। आज विदेचाी कम्पनियाँ भी इस सत्य को स्वीकार करती है। कि भारत में भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाना होगा आज जन संचार माध्यमों से ही वस्तुओ के विज्ञापन हेतु भाषा का सहारा लिया जाता है। जैसे काका–कोला के लिए प्रयुक्त होता है "ठण्डा मतलब कोका कोला" , आदि चाब्द प्रयुक्त किए जाते है। जहाँ प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग से औद्योगिक क्षेत्र में एक क्रान्ति सी आ गई है और विदेचाी कम्पनियाँ अपने उत्पादन को आम जनता तक पहुँचाने में सफल रही है वहीं संचार के क्षेत्र में भी प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रासगिकता कमतर नहीं आंकी जा सकती संचार माध्यमों में समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जो हर व्यक्ति की पहुँच में है और मजे की बात यह है कि समाचार पत्रो की भाषा सामान्य पाठकों पर गहरा असर डालती है। वे चुद्व–अचुद्व, सद्–असद्, साधु अदि की भी मीमांसर करने में अक्षम होते है। उनके सम्मुख लिखित रूप मे जैसी भाषा प्रयुक्त होती है उनके लिए वही आर्दचा हो जाती है।

इलैक्ट्रोनिक संचार माध्यमों में आकाचावाणी, दूरदर्चान और इंटनेट से घर बैठे देचा–विदेचा का समाचार समय में प्राप्त सुलभ हो गया है। हिन्दी समाचार पत्रो की तेजी से बढती संख्या दूरदर्चा पर लोकप्रिय होती हिन्दी कार्यक्रमों और हिन्दी ई–मेल के उपयोग से प्रयोजनमूलक हिन्दी महता स्वतः सिद्व हैं।

आज हम समय के आभाव के कारण सम्प्रेषण हेतु मोबाइल व इन्टरनेट से एस.एम.एसः व फेसबुक , ब्लॉग आदि का सहारा लेते है। इन माध्यमों में प्रयुक्त भाषा की कुछ विद्वान यह कहकर आलोचना कहते है कि यह याधन हिन्दी भाषा के स्वरूप को बिगाड रहे हैं लेकिन वो भूल जाते हैं कि भाषा साहित्यिक या व्याकरण सम्मत बनने से पहले प्रयोजनमूलक रूप में ही आई थी और एस.एम.एसः इन्टरनेट, दूरदर्चान, आदि इसके प्रयोजनमूलक रूप में श्रीवृद्वि कर रहे हैं और धात्वय है कि भाषा यदि परिवर्तनचाील रहेगी तभी वह

जीवित रहेगी और फलेगी–फूलेगी यदि वह स्थिर रहेगी तो मृत हो जाएगी जैसे कि सस्कृत भाषा भारतीय भाषाओं की जननी होने का गौरव पाने के बावजूद भी आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पिछड गई है।

सन्दर्भ एवम् ग्रन्थ सूची व अन्य सामग्री

1. डॉ0 नरेन्द्रा मिश्र, प्रयोजन मूलक हिन्दी और काव्यांन्द्रा, भूमिका
2. डॉ0 पृथ्वीराज पाण्डेयख मानक सामान्य हिन्दी, भूमिका
3. डॉ0 नरेन्द्रा मिश्र, प्रयोजनमूलक हिन्दी और काव्यांन्द्रा, पृ0 14
4. स्पादक सुधाकर पाण्डेय, हिन्दी साहित्य चिन्तन
5. टी0वी0 व रेडियो प्रसारित कार्यक्रम
6. विभिन्न समाचार पत्र

डॉ0 मंजीत

असिस्टैंट प्रोफेसर,

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय,

बहादुरढ़,हरियाणा